# वृद्ध पीपल

विनोदचन्द्र पाण्डेय



राजकमल प्रकाशन
नयी दिल्ली पटना

मूल्य रु 30 00

© विनोदचन्द्र पाण्डेय

पहला संस्करण 1985

प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्रा लि ,
8, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली 110002

मुद्रक रुचिका प्रिण्टस,
नवीन शाहदरा दिल्ली 110032

आवरण चंचल

VRIDDH PEEPAL
Poems by Vinod Chandra Pandeya

सतीश और कमला को
सस्नेह

क्रम

# सुबह सुबह सहज

## आत्मा बोले

जहाँ आत्मा बोले
    वही बसना
गहरी शान्ति प्रतीत हो
    सहज फैले

कुछ भी नही आसपास
    मैं देखता सिफ नीलाकाश
न बिजली कडकी
    न बादल बरसा
भीगी द्रुत मन की धरती

## बाजीगर

एक से दो
        दो से चार
बाजीगर समय चाहता
यह लोभी हृदय

जो कबूतर
        हाथ मे पदा होगा
कही कमाया खिलाया
        झोली म होता

चार से दो
        दो स एक
मेरे मन से भीड हटा

## सूरज

आ गया सूरज
अथक प्रकाशवान
निराशा नही जानता
जीवन वान

कुछ प्रारम्भ होना चाहता
ओसमय समय
मुझसे गहराई मे
मेरा अपरिचित हृदय

यह द्रुत समय आता
और बीत जाता
कुछ सुलचा अपूव
हप जसा बढा

## सकल्प

मैंने उतार दिये हैं
अपने सिर से
यह हो जाय
वह न हो
इन चिंताओं के बोझ

जो देगा
झेल लेंगे उस दिन
बस निभाना है पूरे जोर से
तुम्हारी ओर बढ़ने का प्रण

•

## पेड़ देवता

मैं भी जकड़ लेता
किसी घम धरती पर
तुम्हारी जसी जड़ें
ओ पेड़ देवता

जाये आये दुख सुख
बढ़े या घटे पूछ
थी और गई कोकिला
मैं दृढ़ रहता

## जय हनुमान

जय हनुमान छुट्टी हुई
उत्तरदायित्व फक्ता उठा उठा
स्त्री जजाल म बहुत फसा
कम द सका कम मिला
नरोत्तम होने का भार उतरा
फिर बालसुदर है घरा

## लापरवाही

जब तक मैं न जीत लूं
            जीत-हार के बीच लापरवाही
अनिश्चय मे रहे
            मेरे भाग्य की बाज़ी

## विश्वास

मेरे कमरे के बाहर
जो अस्त व्यस्त बाग है
उसमें कितनी प्रतीक्षा
और आत्मविश्वास है
विश्व में असंख्य वन कानन
वसंत नही भूलेगा

## आनन्द बीज

सुबह जो आनन्द बीज मिला
शान्ति जितनी उगा पाया
उसी से पार करना है
दिन-भर

## मूर्तिवत हृदय

किसने किससे क्या कहा
              अटकल लगाना छोडा
मरे बारे म कोई
              जाला या न वाला

एक मन्दिर म बैठा हू
              यह मूर्तिवत हृदय
किसी दिन बातचीत शुरू करेगा
जो आवरण जीवन-भर बुना
              धीरे धीरे उधडेगा

## सूरज (2)

एक थकाई मिटाते हो
कुछ अपना-सा बनाने की सीख
सुनहला मुकुट पहन
        सूरज राजा

घाटियों के धुएँ में बन्द
हमारे गांवों तक
        चन्द्रवंशी स्त्रियाँ
        सूर्यवंशी पुरुष मन

सबको छूता सुनहला सचार
धन या धनाढ्य होने जैसा
        समथ मन करते हो

अकेले हो सूरज
        अकेलापन छूते हो
युगल की नहीं
        एक की पूर्णता देते हो
        सूर्य आशीर्वाद

## यहाँ

उतार दो हृदय से
महत्वाकांक्षा
छोड दो घोडे को चरने

तुम जिसे मानते सब कुछ
यहाँ वह कुछ भी नही है

स्वास्थ्य शान्ति शुचि
हरियाली-बादल-हवा
इनको हृदय पर पडने दो

## पुलक

( 1 )

किसी ने सुगन्ध पायी
किसी ने चखा
किसी को कुछ दीखा
या छू गया
यह सबकुछ नही
रामनाम की सरिता मे
स्नान करना है

( 2 )

कितने वर्ष बीत जाते
सुखी भी दुखी भी
साथ-साथ और एकाकी
यह पुलक हुई नही

## मन्दोदरी-विवाह

ढोल पीटते अखाड़े
गुजरते सड़क से
मन्दोदरी का
रावण से विवाह है

शिशिर के राक्षस
मुख फाड़ चिंघाड़ते
खा गये ऊष्मा सब
अब व्यर्थ खटखटाते

## कृष्ण-निमन्त्रण

श्याम बादलवाला आकाश
फैले कृष्ण केश
शुरू होती रुकती बरसात

मन गम्भीर और उल्लसित करता
आज ध्यान मे पूरी न रहेगी बात
होगा कृष्ण-साक्षात्कार

सब गुरुओ की आज कृपा है
हृष मे भीगते रहे वृक्ष देवता
मन मे फटनेवाली तडित

आकाश मे है कृष्ण-निमन्त्रण

## कृष्ण-जन्म

मुरय तो असुर अह का
मनजीवन पर राज ह
गाय चरानेवाला के बीच
कोई हा वशी वजान लगा

दूर ग्राम प्रदश मे
नीली तन्मयता बढती
सहज की मोहनी पा
गोपियाँ रास करती

घन और जार से वसे ही
चलता है मुख्य जीवन
कथाएँ हैं कल्पनाएँ हैं आगे
राज्य का अधिग्रहण

## आस्थाएँ

1

विशाल वृद्ध पीपल
सिखला देगा
मुण काले बैल को भी—

2

सुंदर सुडौल आकर्षक
तो हिरन भी होते हैं
रईस
हलवाई भी

## शब्द पाना

मन के पीछे स आया
शब्द हलक म पाया
प्रेम की शान्त शैली थी

चटक सटीक सुभाषित
मन प्रसन्न करत
पर कविता गम्भीरता है
हृदय म कुछ असली
होना पडता

बादल ताकना हृदयाकाश म
पानी की प्रतीक्षा
सूखे कुएँ म

## खजाना

एक खज़ाना है
हृदय के नीचे गडा
मुझे विश्वास है पूरा

अभाव से पीडित
मैं जा होता हूँ खडा
ठीक उसी स्थान पर

मेरा मन रईस हो जाता
जसे वह खज़ाना पा
जो मुझम है और मेरा
कभी न हुआ

## सुबह सुबह

सुबह-सुबह
नगर पर रहता भोलापन

वृक्ष वनस्पति-घास
के बीच उगे
लगते घर सडक स्कूल ब द दुकान

बाग के गुलाब
सजीव अभी
फूल हो जायेंगे

बचपन के मन मे
भीड कम थी
दीखता था यह विश्व
कोई कहानी नही थी
पर मन लगा रहता था

## आनन्द की धारा

क्या बैठे हो स्वार्थ निमग्न
इससे बचने और उसको पाने
आज सुबह भी आनन्द की धारा
कहीं निकट थी और बह गयी

## बाग मे पूर्णिमा

## मिलन

क्या सुख होगा उसका
प्रेम-साधना से पाया
हम कहाँ मिलेंगे पहली बार

—किसी नदी के तीर
        लिखा है तेरा-मेरा
मिलन सस्कार
अत ससार और अह
        मुझे पहचान लोगे तुम
लकड़ियो के ढेर पर लेटे
        अग्नि शिखा उठने के क्षण

# प्रतीक्षा

( 1 )

पीपल की पत्तियों में सनसनी
यहाँ ऊँचे पर पाई हवा है
जो मुझे नहीं छूती

( 2 )

दोनों ओर रंग है
यहाँ विषम
वहाँ सहज है

( 3 )

बजा-बजा
जोर से तुरही
आज उसकी प्रीति
मुझे मिलनेवाली

( 4 )

अकेले रहनेवाले के लिए
एक लाल सायंकाल
मन की जड़ें
हिला जाता

## शृंगार

पूरा शृंगार किया
　　　　　　सब जेवर पहिन
जितन प्रसन्न होते तुम
मुझे देख
　　　　　　कोई नही हुआ

## त-त्र

श्री गम्माहिनी माता
जो पाप ने गय
                उस दूर मुल्म
उ हे काटना सिखा

मुझे चाहिए उसका
                झुका माथा
मेरे छलबल से दे
और मां न अपनी मर्जी से दिया
                हृ-य और रक्त हृदय का

## मधुर

मधुर थे पास
    मधुर है दूरी
मधुर था साथ
    मधुर है स्मृति

मधुर व्यापार
    मधुर ऋण
वसूली लेना
    देना मधुर

अगाध निराशा
    मधुर रहता
नकली माना
    मधुर हँसता
जहाँ हृदय था
    अड़ियल कड़वा
वहाँ मधुर है
    प्लावित बहता

## प्रेम की मर्जी

निश्छल हुए बिना
नहीं मिलता
उपवन में फूल बीनता प्रेम

दलदल से निकल आना
जरूरी है पर काफी नहीं
क्योंकि प्रेम की अपनी मर्जी है

## ऋतु-परिवर्तन

शिशिर प्रारम्भ पसाद
स्मृतियों की रेत में खोजना सोना
किसी प्रेम जसे तत्व का

यह रोग का काटा
हृदय में चुभा हुआ
ऋतु-परिवतन पर
फिर वसक उठता

## वीणा का अग

तुमस मिलना
गगा नहाना
सब कट जाते दुख
जन्म-जन्मान्तर के

मेरे सौभाग्यो मे
इतनी पेंग नही
तुम्हारे स्वग तक
पहुँच जाते

बजते रहे तबल और मृदग
बजा ही नही वीणा का अग
इतना ही जुटा सगीत का ठाठ
जीवन समारोह होता है मग

## बन्दर

काले मुह बन्दर
धूप म बैठे
जू निकलवा रहे हैं
पत्नियो से

यह नही लगता
बोल नही सकत
अब चुप हैं जैसे
बोल चुके हैं

लेटे - बैठे
इतने आराम से
तृप्ति प्राप्त
तैरते

यह अलस-तमस
हमने साथ जाना था
जाडो के दिनो का
धूप की छुट्टी म बीतना।

बन्दर दिन गय
बना अकेला मानव

## स्त्री

स्त्री एक खादय सामग्री रही
अनुपम सुगन्धित
बन्द कमरों में केलि
ऐश्वर्य पहिनाती
एक और विजय
पौरुष व भाग्य से मिली
अहं वर्धक उदार करती

कवियों का कहना है
मन्त्रवान यह जाति
सम्पर्क से मिलती सिद्धि
हृदय में रस निर्झर खुल जाता
टूट जाती मन की निविड रात्रि
सूक्ष्म आकाश आलोकित होता
इस कृपा की न हुई अनुभूति

## प्रेम और भोग

यह धीरे है
　　　　वह जल्दी
यह स्वाद लेकर खाना
　　　　वह निगलना
यह सुरा है
　　　　वह पेट भरना
यह मित्रता
　　　　वह जीतना
यह सग म सुख है
　　　　वह दुख मे निबटना
यह पूवराग
　　　　वह सुरत
नही नही नही
　　　　तुम समझे ही नही

## खाली हाथ प्रेम

हमें चाहिए सफलता
भोग सुरक्षा
सूक्ष्म खाली हाथ प्रेम
भला आदमी है
जरा फिट नहीं होता

## दासी देवियाँ

दासियाँ देह की सेवा से
मनोकामना सिद्ध करती हैं
देवियाँ मन में पूर्णकाम हो
देह अर्पण करती हैं

## चुम्बन

चुम्बन से चुड़ैल
नहीं बदलेगी
राजकुमार समझता अपने को
पहिचानेगा पिशाचयोनि अपनी

## ताड़का

भलाई के यज्ञ उजाड़नेवाली
अबाधित फिरती ताड़काएँ
राम-सीता मिलन पूर्णकाम
स्थगित है इसलिए

## थोडी-सी झडी

धूल की हवा
थोडी-सी झडी
दुबारा चाहा मन
फैसल की फाइलें फेंक देने
कुछ नया जोडने
प्रेम जैसा कहीं

मुख पर लिखा फैसला
लिखाते रहेगा फैसले
जीवन की इच्छा लौटेगी
पर कुछ देर में गुजरेगी

धूल की हवा
थोडी-सी झडी

## बडा मकान

मन व्यस्त है
तुम्हें घटाता इधर-उधर
जीवन रोकती कभी
कम हो जाये

क्या मेरा हृदय
कभी बडा मकान होगा
कोई रह सके साथ
बिना अशान्ति बढाये

## वैसी

ऐसी सम्बन्ध है

चलेगा

यह प्लास्टिक

टूटेगा नहीं

खिंचेगा

फेंका नहीं जायेगा

पड़ा रहेगा

मांजा गया

घिस जायेगा

# वृद्ध पीपल

## वृक्षात्मा

पिछले जन्म में शायद
मैं ऐसा वृक्ष था
मन मिलते ही हैं
बिल्ली, कुत्ते, भेड़, तोते जैसे —
मेरा मन है
ऊँचा स्थिर वृक्ष जाति का
शहर में जीवन काटता

ऊँचे बड़े पेड़ों को देख
इतनी स्वस्ति होती है
वृद्ध पीपल में पत्ते नीम
मित्रों से बातचीत होती हो जैसे
मन हल्का होता
गुजर जाता समय सहज

## सेनापति कवि

बाहर के लिए सेनापति
अपने लिए कवि
दृढ़ता और अग्नि
मेरे लिए नहीं
हवा या सजलता

मेरे लिए नहीं
बगल भरे धीमे दिवस
जीवन मुख्यत एकाकी
जिस दिन धुन समाप्त होगी
जीवन इच्छा भी
बुझ चुकेगी

यथा मैंने पहिचानी
अपने स्वभाव का मूल रसाकृति
कुछ करना चाहता
कुछ कविता लिखना

## घटनाहीन

चिन्ताहीनता थी और समय
मन को परखन और समथन
भागवत शिक्षा क द्वारा

पद प्रभुत्व या रशमी सुख
नही थे तो क्या
यह जो मिल रहा है राज
देख सकना
सुबह का आना
कुछ देर हल्की होती
मन की भी कालिमा

जब बनेगी कभी सूची
क्या पाया जीवन म इसकी
यह घटनाहीन अकेले दिवस
गिने जायेंगे बहुत

## सेनापति-कवि

बाहर के लिए सेनापति
अपने लिए कवि
दृढ़ता और अग्नि
मेरे लिए नहीं
हवा या सजलता

मेरे लिए नहीं
बगल भर धीमे दिवस
जीवन मुख्यत: एकाकी
जिस दिन क्षुधा समाप्त होगी
जीवन इच्छा भी
बुझ चुकेगी

क्या मैंने पहिचानी
अपने स्वभाव की मूल रेखाकृति
कुछ करना चाहता
कुछ कविता लिखना

## घटनाहीन

चिन्ताहीनता थी और समय
मन को परखने और समझने
भागवत शिक्षा के द्वारा

पद प्रभुत्व या रेशमी सुख
नहीं थे तो क्या
यह जो मिल रहा है राज़
देख सकना
सुबह का आना
कुछ देर हल्की होती
मन की भी कालिमा

जब बनेगी कभी सूची
क्या पाया जीवन में इसकी
यह घटनाहीन अकेले दिवस
गिने जायेंगे बहुत

## मस्त

पैर फलाये पढ़ना पुस्तक
खाना पीना सोना
अपन घर के बिल म रहना

जब सुखी थे
नीद गहरी म की
दुख आये
उजड गय

## शान्त मन

आज मन शान्त हुआ मेरा
उमडते-घुमडते
सम्भव असम्भव
गिरे अपनी-अपनी जगह पर

कल तक चमकती स्त्रियो से
कुछ कहने को नहीं बचा
मन से उतर गय
फोन नम्बर

जीवन की चिन्ताएँ
जुट आयी
और मन लग गया

## दशरथ

कवेयी ढग
अनुराग ससार न
परड रखे मेर प्रण
श्याम शात के लिए
        माँगते वनवास

मैं जो देना चाहता
        अपना राज्य
किसी मँझल
        परदश गये
गुण का बढात अधिकार

निभाने होंगे प्रण
और प्राण जायेंगे

## भग्न मस्तक

यदि भग्न मस्तक मिले
मरी देह किसी सवेरे
यही सोचना क्षमा करते
चला गया विनोद
जो राह मिली

गम्भीर लेन-देन कहां नही थी
चुम्बन से अल्प सम्बन्ध
कुछ जरूर थे
न धूप पहले थी
न अब अँधेरा हुआ

"मेरा सब सच जाननेवाले मित्र
तुमसे भी मैं कह गया कुछ झूठ
झूठ-सच परखने के अनुभव से
मुझे सही कर लेना'

## सारांश

कोई नहीं हुआ मर लिए
मुझसे प्रथम
अपना भरण-पोषण
अपनी शिक्षा दीक्षा
अपनी सफलता की चिन्ता
ले गयी पूरा जीवन

जितना अन्न कमाया
स्त्री, पुत्र, पुत्री का भाग
मैंने स्वयं खाया

मिलते हैं चारों तरफ
बेचटखे अहवाल
बड़े शब्दों में कुशलता
क्षुद्र हृदय

भलाई
यह नयी सुन्दरता
अन्तिम वर्षों में जानी

## साधना

यह तो सच है
ख्याति नहीं मिली
न प्रशंसा हुई
न अब होगी

फिर भी लिखते रहे
थी मजबूरी
अपने को पाने
यही साधना थी मेरी

उदासी से लड़ते रहना
पराक्रम था
प्रेम चमके कभी-कभी
जीवन बीता एकाकी

## एक कर्ण

जो वक्ष और बाहुओ मे
जडा था अभिमान का कवच
वह तो ले लिया
युद्ध के पूर्व

प्रशसा से बढता था ओज
ले लिए कर्ण-कुण्डल
दिया सारथी शल्य

सूर्य-पुत्र सिह लग्न
आ गया पराजय का दिवस
श्रृगालो का बढता शोर
क्षितिज पर

## फल सरीखा

असली उड़ गया
            नाटक बचे
प्रम का शौक, फिर भी
सूखे हृदय को ढके
कुछ सौन्दय
            जीवन म ला सकता
फूल सरीखा दीखता
यह सुख के लोभ का कीडा

## मेरा भाग्य

जो चाहा बहुत
　　　　मिला नही बिलकुल
जो चाहा थोडा
　　　　मिल गया पूरा का पूरा

जब सुख निधि थी मेरे पास
　　　　मेरे हाल थे फटेहाल
आज बाहर है सब ठीक
　　　　भीतर मुख्यत मत

## समर्पण

मैं नही हो सकता
वह—जिम्मेदार समथ व्यक्ति
जो परिवार का भार
सजग ढग से निभाता
अपना सिद्धान्त है जल्दी-से-जल्दी
पा लेना सम्पूण बेफिक्री

जिसने आज पार करा दिया
कागज की नाव मे
उसी की मर्जी पर है आगे
कहाँ कैसे जियेंगे
बुढापे मे

## मेरा भाग्य

जो चाहा बहुत
　　　　मिला नहीं बिलकुल
जो चाहा थोडा
　　　　मिल गया पूरा का पूरा

जब सुख निधि थी मेरे पास
　　　　मेरे हाल थे फटेहाल
आज बाहर है सब ठीक
　　　　भीतर मुख्यत मत

## सूक्ष्म की उम्र

जिस भाग्य से पचास वर्ष बीते
उसी से साठ कुछ निखर सके
क्या सोचना

आज उतरनेवाली है
आकाश से नयी सीढ़ी
भूलो युगल सुख
मिले या न मिले
अकेले अनुभव के दिन हैं मेरे

एक हरा तोता बडबडाता
हरे नीम शिखर पर उतरता
चश्मा हटाकर देखो
कोई सूक्ष्म कथा
सुबह-सुबह चली है

## ब्राह्मण अध्यवसाय

ऐश्वय का विचार
बनते ही
ओ बुद्धि !
छेद देना

दिन नही जायेंगे
हाथी पर चढे
जीवन सुखी वीतेगा
यदि ब्राह्मण अध्यवसाय म वीते

पढना-लिखना
गढना कथा
या कभी दक्षिणी बयार की तरह
मन की खिडकी पर
प्रस्तुत होना कविता का

## सूक्ष्म की उम्र

जिस भाग्य से पचास वर्ष बीते
उसी का साठ कुछ निखर सके
क्या सोचना

आज उतरनेवाली है
                आकाश से नयी सीढ़ी
भूलो युगल सुख
                मिले या न मिले
अकेले अनुभव के दिन हैं मेरे

एक हरा तोता बड़बड़ाता
हरे नीम शिखर पर उतरता
चश्मा हटाकर देखो
                कोई सूक्ष्म कथा
सुबह-सुबह चली है

## साधना

इस आलोचना मे मत पड़ो
यह दिवस कोई और दिवस होता
दूसरा देश—समृद्ध काल

यहीं इसी मिले दिवस से चलो
कितनी शान्ति उपजायी मन में
क्या प्रफुल्लता की पूंजी पायी

लम्बे पहर जूझना है
अन्य विपरीत अहं
मन के तमस
प्रतिकूल घटनाओं से

सब-कुछ छिन जाय
अपने पर राज्य रहे
मन की समता

दने म दत्तचित्त
मांगने से मुक्त रहूँ
उदासी खालीपन से
स्वय ही युद्ध करूँ

सन्ध्या तक यश लाभ यश हानि
पाया जो पा न सका
अपने से अलग कर दू
फिर मन खाल सहज हो
फिर समाधि म बैठू

गगा का अन्त

समाज

लूटने म लग
भयभीत, अपन या परिवार के लिए
उसी तालाब से जीना है
जिसे आज भरसक ग दा करते

## गगा का अन्त

1

गगा म गिर रहा गू
चिताओ से खींच
आधे-जले मुरदे
गगा हुई अपवित्र
कानपुर के नीचे
प्रयाग म खतरा बढा
काशी कलुषित हुई

गगाजल पीकर
लोग मरने लगेंगे
शहरों की गन्दगी से
नदी हुई दुर्गन्धित
जलधारा रोज क्षीण
गटर रोज़ बढा
पाप बहानेवाली धारा—
आखिर दे मारा

2

भारतीय सब जगह थूकता है
जगह-अजगह मूतता है
दूषित करने मे
प्रथम पिशाच
गगा को लगा ही दिया काम से

## पैसो का चक्कर

सबसे बडा हप छीननेवाला
पैसो का डर
कोई ले गया
या नहीं पाया
कही अटका
कम कमाया
दे दिया बेकार
खो गया
वाप र बाप !
मन को मार देता है
कोई ठिकाना नही छाडता
यह पैसो का चक्कर

## पिता

हमारे पिता धीरे धीरे कुन्द हा रहे
लकडी का भाग उनमे बढ रहा
आखें अभी जाग्रत है चौकन्नी
चेहरा कोई पता नही द रहा
एक ही प्रश्न है इस कम्प्यूटर मे
कहाँ रुपये मे बन रही चवन्नी

# विपणन विशेषज्ञ

अपने को सस्ता बेचना
एक विपणन-नीति
चमकता मुख रखना
ठीक कपड़े
तुरत ड्रिंक्स पर बुलाना
पार्टियों की ख्याति

मुझे चाहिए
विपणन विशेषज्ञ
बाहर दाम बढ़े
और भीतर मूल्य न गिरे
रईसों पर सिक्का चले
गरीबों का पक्ष रहे
जीत नयी-नयी
मैं रहूँ वही

## कूटनीति

जीवन है कूटनीति
जा चाहो उसे छिपाओ
बात चलती रहे
और कुछ न हो
कौन थकता है पहले
जीतो नहीं तो
जिच्च बढ़ाओ
या थोड़ा सा हार
बाजी मिलेगी अगली बार

कुछ मिल जाय
इस चौकन्नी चाल से
पर घटिया बनाते तुम्हें
ऐसे सौद

## असुर

मैं हूँ महानीच
मैं हूँ सुपरअसुर
राक्षस पाते ह आजकल
दिल्ली म अप्सराएँ
लूट छोडो तो
छूट जाता पाना
धमकी से होते काम
लटके रहते अन्यथा
सात्विक बुद्धि बेकार
धक्का धमकी चलती
विभीषण पिटे बठे हैं
दिल्ली लका है रावण की

## भारी और बन्द

विषयासक्ति लाती भारीपन
व्यक्ति हो जाते बन्द
पालिश के डिब्बे जैसे
उनमे भीतर नही दीखता
चौकन्ने इधर-उधर देखते

भयभीत है भारी और बन्द
जो कुछ भी नही देता
अपने मन का अता पता
बस ठस्स बैठा रहता
मौके का चूहा ताकता

भयभीत भय छिपाये
भयावह लगता

## भारतीय

हमारा विश्वास है
इस पर मर मिट सकते
थोड़े स जीवन भर सकता

सहस्र हाथ से लूटनेवाला
सौ मुखा से खानेवाला
तो अधम राक्षस होता

साचे हैं उपनिषद
पेडा के नीचे बसर कर
नदी के स्नान मे लगा है
सब पाप धुल गया

## दो सीढियाँ

दो सीढ़ियाँ हैं
—अपने श्रम से चढनेवाली
—चापलूसी से बढनेवाली

पहली है सीधी और कठिन
बाँस की चीज सर्वत्र मिलती
दूसरी है लिफ्ट
धक्कम धुक्का भीड इसमे रहती

## भानजा

मेरा व्यंगचित्र सामने है—
बातूनी असभ्य भानजा
हर बात पर अपनी बात अड़ाता
काम मे जुटने से कतराता
हे भगवान क्या मैं ऐसा
आत्मविश्वासहीन ग्राम्य भोंपू था—

## नकली सचय

मेरी जीवन वस्तु थी
शिल्प की ठोक पर बिखरनेवाली
सत्य की कीमत से कतरा
नकली जोड़नेवाली, बहुत मारा

## बुर्जुआ

सब मानते अपने को
—निष्कपट
—हा, अतिकामी
—सम्बन्धो की लेने-देने म
उठायी है बहुत हानि

स्पष्ट ऐश्वय मे जीते
और अप्रकट वेदना से पीडित
सारे सुख का सुख
सारे दुख की सहानुभूति चाहते

## आगे बढो

कुछ गुर करो—ढोल पीटो
और समय पर निकलो

उठते चक्र से
उठते चक्र पर कूदो
            दूसरे
हार और दुख की
            छूत से बचो
इनमें अटके
            लोगों से—बढो

दफ्तर की ऊँची
            डालियों पर बैठे
इस मत के अनुयायी
            लक्ष्मी के वाहन सब

## ब्यूरोक्रेट

इन चुनाव-परिणामो से
सरकार को सीखना चाहिए कुछ ?
क्या-कुछ
मिस्टर हित प्रकाश
पद्मनाभन को हटा
आपको तरक्की देना तुरत ।

## विभागाध्यक्ष

हर बात पर लगाते हैं
—जैसी आज्ञा थी आपकी
किस खूबसूरती से मिलाते हैं
चापलूसी और मुस्तैदी

खय्याम

## सुबह

उठो—सुबह ने फेंका पत्थर
रात्रि के वटवक्ष पर
तारो का झुण्ड उड पडा
पूव के अहरी ने पकडा
प्रकाश के फन्दे म
राज महल का शिखर

## वसन्त

चलो भर दो प्याला
वसन्त की होली मे—फेंक दो
पश्चाताप का शिशिर लबादा

समय की चिडिया को
थोडी दूर ही जाना
और वह चल चुकी
पख फैला

## जमशेद और कैकोबाद

सुबह हज़ार फूल खिले
और हज़ार धूल मे मिले
जो ऋतु लाती है गुलाब
जमशेद और कैकोबाद
उसी म उठे

## गुम कोयल

वसन्त गुम हुआ गुलाब के साथ
युवावस्था का मधुर इतिहास
हो गया समाप्त
शाखाओ म गानेवाली कोयल
क्व किधर उड गयी
कौन जाने

## कुछ बात थी

एक द्वार था
चाभी नही मिली
एक परदा
जिसके पार न दीखा
कुछ बात थी तेरी-मेरी
कुछ लगा—
फिर मिट गयी अनुभूति

## एक सच

चलो वृद्ध खय्याम के साथ—
ज्ञानियों को छोड बहस करते—
एक बात तय है
जीवन फिसलता हमसे
और कुछ हो न हो
इतना सच है
फूल एक बार खिला
बिखरता है सदा के लिए





## बहस का चक्कर

मैं भी जब युवा था
पण्डित और साधुओं का सत्संग करता
और उसके बारे में बहस
के चक्कर में पड़ता
पर सदा लौटा
उसी द्वार से जिससे घुसा

## घर बसाया

कितने दिनो से चल रही है
मेरे घर मे
                नये विवाह की मस्ती
अगूर की बेटी से घर बसाया है
तलाक दी बाझ बुद्धि

## बदनामी

कविता के लिए बदनामी मोल ली
इज्जत मैंने प्यालो मे डुबा दी
जिस बुतपरस्ती से जिया बहुत दिन
ज़माने की नज़रो मे उसने
मेरी साख लुटा दी

## तौबा

माना तौबा की है कई बार
पर फिर लौटा है वसन्त
हाथ में गुलाब लिये
मेरे पश्चाताप के चिथड़े उड़ाते

क्या मैं होश में था
जब उठायी थी तौबा

## नकद

दुनियावी दवदबे मानते कोई
आनेवाला स्वर्ग अन्य

दूर के ढोल सुहावने साथी
नकद लेकर छोड दे बाकी

## हृदय का बटुआ

गुलाबों की खिलखिलाती धज
दुनिया में उतरने की देख
खोलकर मेरे
हृदय के बटुए का तागा
बिखरा दो बाग में

## यह मन

मन जो प्रशसा से फूलता
जो अस्वीकृति मे फूटता
इस बुलबुले से क्या जीना

अहकारी बातो का
            सिलसिला असभ्य
अपने श्रवण से
            विश्वास अधूरा रहता
मैं तुम्हे पकडकर कहता जाता

कुछ सगीन बने शाक्त हैं
कुछ सक्स—रस के नाचते वैष्णव
काले घन का भोला शिव
क्षुद्र लोगो को सिद्धियाँ दिये

कहाँ आनन्द
            कहाँ सरल आनन्द इस मे

## दरार

दुख ऊपर से पडा था
उठ जायेगा ऊपर से
हृदय की धरती फटी
जानकर अपनी ।

## रद्दी

क्या मैं टटोलू अपना मन
कारखाना रद्दी का
बिगडी अधूरी बाता का
इसमे कुछ नही
फिर जा देखने लायक
मालखाना अपराधो का

जा पहली बोली मिले
उसमे वेचने लायक
एक हरिनाम पर निछावर
सब कुछ मेरे भीतर

## रूपहीन

किस कोण से सुन्दर ?
अप्रिय गवाही देता मुकुर
आज पलट लिये सब सफे
इस किताब में कुछ नहीं रोचक

चट्टान घिसी अनुभव से
कोई रूप नहीं उभरा

## सप-रस्सी

सह लेते दुनियावी लोग
इसलिए सहने को क्या गिनना
जब अवसर आता
यह मरी दीखती सुख प्रवृत्ति
सप बन जाती रस्सी

## योगी लगते

पत्तियाँ उतर गयी
योगी से लगते पेड
जीवन भी एक दिन
खाली लगा था ऐसे ही
मन मे निकली गहरी
वासनाओ की जडें

## बेखबर

यही हानि हो रही है
मैं हूँ बेखबर
यही जीने मे मग्न
बना जडमति
जेल को तोडने
उपाय नही करता
आदर्श बन्दी
बनने मे जुटा

## तियक

मन की योनी
बिल मे रहनेवाला की

जो बाहर निकल
प्रकाश और हवा मे खेलें
इतना नत्य नही

अपने से गहरा अप्रकाश
इस तमस से महातमस

अडना है सर्वाधिक पराक्रम
सह सकना समथ धम

## चुहिया

रगीन भावनाओ का पहाड
निकला
            सैक्स की चुहिया
पूर्णिमा बीत गयी
गरमी मे उबलता सवेरा

## नृशस

जीवन की नतिकता
तहस नहस कर
अभी भी मुस्करा रहा है, वामन
आत्म तुष्टियाँ चबा रहा है

आस्थाओ का कोमल मन
विश्वासघात से छेद
अरे पाप डकारते, मोटे
तुझमे उठता ही नही खेद

पशु पीटन से ही सीखते
समझ आता डण्डे खाकर
कीचड म डूबता सूअर
आत्मा का स्वरूप चाहिए
यहाँ नृशस हरिजन

## अकल्पित

जो मन चाहता है
उसकी ठीक कल्पना भी नहीं हो पाती
भाग्य को दोष क्या देना
वह अकल्पित बात
यदि नहीं होती

## घोघा बसन्त

क्या घाघा बसन्त
गा उठेगा एक दिन
अस्वास्थ्य से भारी
यह मन मलग

दिनो की रगड
चमका सकती
ब द मुट्ठियो मे पाऊँगा
सुग ध की चुटकी

देह म स्थायी थकान
मन मे अपाहिज काम
खाली ब दूक की चाँदमारी
अपना जीवन तमाम

## छुट्टी हो

फर्जों से छुटाओ
तो सत्य मे चर्या हो
कल्पना का भाडा फूटे
तो कुछ सच मे दीखे

जो चुटकियाँ बजा बजा
मुझे नचा रही इच्छाएँ
इनकी टोली हटे
तो मन कुछ अन्य सोचे

खालीपन है मन मे
सचय का रोग जीवन मे
एक से दस भले
खोपडी खोलता हूँ
दस जूते खाने

## छह अन्धे

छह अन्धे पहिचान आये
आत्मा का हाथी—

—स्वास्थ्य और सैक्स सब कुछ है
—जीवन का गुण समाज देता
—क्रूर अन्धा खेल चलता
—मृत्युपरांत स्वर्ग नरक मिलता
—जन्म से जन्म विकास हो रहा
—अणु-युद्ध से सब समाप्त है

पचास

मेरे जीवन का घेरा
रोज एकाकी होता
पाने का द्वार बन्द
देने का खुला

अपने को पकड़ न पाता
अपने से यहाँ न छूटता पीछा
बच जाता यह हर सायंकाल
उदासी से साक्षात्कार

किस दिन से गिनूँ बुढ़ापा
जिस दिन पहली दाढ़ गयी
बालों में सफेदी दीखने लगी
यह सब बाहरी खटर-पटर
बुढ़ापा उस दिन आ बसा
जब थकाई हो गयी स्थायी

## हर्ष-पाथेय

युवावस्था सह सकती थी
घने सायकाल सरीखे दु ख
वर्ष पर्यन्त प्रेम रोग
उदासी के शिशिर

अब पचास के बाद
जीवन योजना हर रोज़ की
राज चढाई निपटने
हर्ष पाथेय चाहिए

## मन

शब्द मुकुर मे देखना
कैसा आज चेहरा है
मन का मौसम प्रसन्न उदास
धूप या कोहरा है

चिन्ताओं की चिड़िया
मन चुगती सुबह-भर
कोई मधुर बात मन म आ
इन्हे नही हाँक देती

ज़रा-से स्वागत से फूला
ज़रा-सी ठेस से फूटा
इस कातर कोमलता मे
कहा आधार
स्थायी रूप का

## निर्जीव

बाग मे सुबह-सुबह
मेरी खिडकी के आगे
कौए झुण्ड-पर-झुण्ड उतरे
—कोई मृत जानवर था पडा ?
—मेरी निर्जीवता का पड गया पता

# मुफ़स्सिल और विदेश

## अजमेर

आगे बढने की ट्रेन से
उतार दिया गया हूँ
छोटे स्टेशन मे प्रतीक्षा

पुण्य नही मेरे इतने
कुछ अपने आप और सुन्दर
मेरे जीवन म हो गुज़रे

•

## किशनगढ

पृथ्वी से निकली
नाग रग की
चट्टानो की पीठ
धूल और झाडियाँ
जसे वाद मे ईजाद किय
दष्टि पर आते
कभी-कभी
पेडो के झुण्ड

## कोटा के जुलाहे

पत्थर की दीवारें
खपरैल की छत
कमरो के बीच
हरे पेड
कारखानो मे होती खटपट
दो सदी पहले या आज
वही दृश्य

जुलाहो की तेज आखें
बारीक काम मे बीता जीवन
एक ध्यान जैसा है
खीचना ताना फेंकना बाना
इनके मन शान्त हुए

## गरमी

इतनी गरमी
इसे काटना
तप है
इसमें सोच सकना
या प्रफुल्ल रहना
सिद्धि है

बूँदी के रास्ते में
ऐसे चमकदार मोर मिले
भूल गयी सब धूल और गरमी

## जेनीवा कुछ चित्र

[ 1 ]

सुबह-सुबह
घर-घर
कार लगी
सडक घिसने

खीच कर लाये
मालिको को श्वान
पार्क मे हगने

[ 2 ]

घडियो की
शाप विण्डो मे झाकता
कितनी तन्मयता से
गरीब युवक

[ 3 ]

यहाँ के कुत्ते भौंकते नही
यहाँ के बच्चे हँसते नही।

## ध्यानबद्ध पेड

एक पीपल जैसा पेड
बाहर जेनीवा म खडा
उमी भारतीय शाति से
ताकता खिडकी के भीतर

पत्तियाँ पीली
निकट मे थडनेवाली
रह जाता शिशिर म
मुख्य इच्छाओ की आकृति

शाश्वत भाग्य है
वही ध्यानबद्ध होना
वक्ष नही है सरल
सहना और सहना

## नारंगी चन्द्रमा

दिल्ली के निकट पहुँचे
संध्या के मस्तक पर दीखा
नारंगी चन्द्रमा

बस के पैसेंजर अवाक रह गये
सौन्दर्य इतना बड़ा
निगला न गया

## अजमेर से विदा

अजमेर से विदा
दस चपरासियों ने तुरत
मकान समेट दिया
धक्का पाकर कार चल दी
एक सहयोगी के घर गरम
दूसरे के घर ठण्डा पिया
एक दुख जसा
शब्द टटोलता आगल हुआ

## माँ का खोना

### वापिसी—श्राद्ध पश्चात

आ गये अजमर के
            कथा-कथित पवत
बादल झूमते
            निरन्तर झडी
सावन का प्रथम दिवस

देह मस्तिष्क
            मन मे भीतर तक
थकाई है दीघ
अपना भविष्य सुधारना
छटपटा यहाँ से उड सकना
            नही समथ

यह नही भोग के
            बन्द दिवस
यह सनिटोरियम सप्ताह
            जीवन-मृत्यु का हिसाब
अखबारो से बेखबर
कोई मुझमे करता
किसी परीक्षणफल की प्रतीक्षा

## आखिरी दिवस

दिन भर पडती वर्षा
बाहर का लान
पानी म डूब गया

—बारिश हो रही है ?
हा, मा !
—अच्छा
फिर आख ब द कर
तुम्हारा सवस्व
जीवन मरण चेष्टा मे जुट गया

मत्यु मे जाना
था चप्पा-चप्पा हारना
चारा ओर से बढती बीमारी
एक प्राण का
हारते शरीर से
जितना विरोध हो सके जुटाना

## अन्त

सदा चेष्टापूर्ण बजती सास
जो चालीस दिन न थकी
हम नौ को पाल कर
सत्तर वर्ष गरीबी सह
इतनी प्राणवान हिम्मत थी

लाचारी है आखिरी खींचतान
तुम तो उदारता मे प्रमुख रही

जीवन का धर्म है
जीवन के अन्त का विरोध
अन्त मे
यही बात रहती

## माँ

श्राद्ध हुआ और गया
मृत मा की अटकी छाया
शीतल रखती कृपा
उत्पात बचाती
जीवन साधारण ठिगना कुरूप
अपनी वसूलिया करने लगा

मरी माँ मिल गयी
विश्व माता मे
भगवती बच रही
माँ सब की

## माँ का श्राद्ध

उन तेरह दिन
बारिश न हुई सवेरे
रसोइया
बर्तन माँजनेवाले
कनखल पहुचाने जीप
हरीराम शर्मा
उपलब्ध हो गये—

कोई कठिनाई न हुई
माँ थी आखिर
कोई कठिनाई न हुई

## समाधि-लेख

[ 1 ]

कोई खुश है कि मैं
तीथ सिंह मारा गया
खुश होगा कोई और
उसके मर जाने पर
मृत्यु का बकाया है
हम सब पर

[ 2 ]

जल गया मास जल गयी अस्थियाँ
जान-पहचानवालों में रह गयीं
तुम्हारी भलाई की स्मृतियाँ

[ 3 ]

छोटी मंजु चल बसी
"दुख मत करना तात
मानव जीवन में
होते ही रहते हैं अभाग्य।"

## चेतावनी

इस घर मे रहती थी बुआ
झगडालू कर्कशा
हल्ला न मचाओ बच्चो
कही लौट आयी, तो ?

यह कमरा था सेठ का
पैसे न बजाओ जेब के

यह खाली कमरा
अच्छा लगता
मेरी दिवगत पत्नी का

## कवियों का अन्त

शायर तो गया
खुदावन्द के पास
बेटे को मिली
कुछ किताबों की रायल्टी
एक आटे की चक्की

आँखें ऊपर उठा
कहता है बेटा
जैसी खुदा की मर्ज़ी
किताबें मन्दी हुईं
चल रही है चक्की

निराला गया
जहां जाते हैं फक्कड़ कवि
जो उससे कतराते रहे
जीवन-भर साहित्यिक लोग
अब निराला के किस्से सुना
मनाते सविस्तार शोक

## निष्कर्ष

मुक्ति पा गया आखिरकार
बेचारा दुखी नौमिच
उसने भुगती दुनिया ऐसी
वह नहीं लौटेगा कभी

जीवन एक मजाक है
मैं सोचता था
अब मालूम हो गया

जीवन-कथा सात महीने की
मेरी शुरुआत
आखिर किसलिए!

## स्वर्ग की मुसीबत

स्वगवाले
　　　　निभायेंगे
मौसी
　　　　—बेचारे

क्या स्वग मे घूर घूर
जबडे देखेगा
　　　　दांत का डाक्टर कपूर

## बेचारा यम

यहाँ रहता था जैन मुनि
किधर गया मालूम नहीं
ऊपर स्वर्ग की ओर
सुख और प्रेम वहाँ का खतम
यदि गति हुई निचली
बेचारा यम ।

रामदत्त मास्टर
पहुंचा होगा आप तक
यदि यमराज वहाँ भी
बच्चों की शिक्षा का काम हो
उसे न देना कदापि

## बीज

अरी मामी, अरे माँ
वह बीज ही नही
अभी पेड से गिरा

जिससे लकडी उगती
जो पालने मे लगती
जिसमे बच्चा खेलता
जो मद बनता

मुझे ब्याहने
मुझे बसाने

## वादा

जब बाजरी चिबुक तक पहुचे
भुट्टे मे दाना पक्कर उमगे

मलाई मे आम के टुकडे
और ताल मे स्कूल के लडके
तैरने लगें

तब, आ तब, ओ तब
मेरे सच्चे प्यार का वादा था—

उस समय के आने तक
वह जी नही सकी कुआँरी

## मूर्ख

जब मैं छोटा बच्चा था
थोडी थी मेरी अक्ल
बहुत दिन हो गये तब से
अक्ल की वही शकल

न बढी, न कभी बढेगी
जीवन अन्त होने तक
जितने दिन जीता हू
और मूर्ख होता हूँ

## हितोपदेश

[ 1 ]

ससार विपवृक्ष के
दो ही रसयुक्त फल है
काव्यामत का अनुभव
सुजनो से सत्सग

[ 2 ]

लघुचित्त गणना करते
अपना-पराया
उदार लोगो के लिए
सारी वसुधा कुटुम्ब है

[ 3 ]

इतना अतिथि सत्कार
कम नही पडता
सज्जनो के घर
बैठाना, देना जल
मृदुवाणी मे स्वागत

## नयी दिल्ली

पृथ्वी के पास दिखाने
कुछ नही इससे सुदर
हृदय का कुद होगा वह
जो ऐसे ऐश्वयवान, मन—को—छूते—
दृश्य से गुजर जाये

इस समय धारण किय है
नयी दिल्ली
सुबह की सुदरता वसन की तरह

कभी देखी नही, न मन मे बसी
शाति ऐसी गहरी
हे भगवान, इमारतें दीघ निद्रा मे लगती
सारा विशाल हृदय धडकन शून्य

## हितोपदेश

[ 1 ]

ससार विषवृक्ष के
दो ही रसयुक्त फल हैं
काव्यामृत का अनुभव
सुजना से सत्सग

[ 2 ]

लघुचित्त गणना करते
अपना-पराया
उदार लोगो के लिए
सारी वसुधा कुटुम्ब है

[ 3 ]

इतना अतिथि सत्कार
कम नही पडता
सज्जनो के घर
बठाना, देना जल
मदुवाणी मे स्वागत

[ 4 ]

शोक के कारण सहस्र
भय के कारण शत
आते हैं दिवस-पर दिवस
मूढ को अशान्त करते
पण्डित का नही

[ 5 ]

जिसने आशा को छोडा
निराशा का आलम्बन किया
उसी ने पढा है—उसी न सुना
उसी ने किया है

[ 6 ]

सन्तुष्ट अन्त करणवाले को
मिलती सब सम्पत्तियाँ
जिसने जूता पहिना हो
उसे चमडे से ढकी है पृथ्वी

[ 7 ]

क्षुद्र वस्तुएँ भी
समुदाय मे
कार्य-साधिका बनती
गज को बाँधनेवाली
तृणो की बटी रस्सी

## हाइकू

फूल ?
इस प्रदेश म
घास भी झूमती

आँख लगी
उठा
वसन्त चला गया

आज तुम भी
काँप रहे हो
शरद चन्द्रमा

शिशिर
चिड़िएँ भी—
और बादल
बुड्ढे लगते

## मुट्ठी

कोई पूछे मुट्ठी मे क्या है
कुछ नही, है भी कुछ नही
फिर भी मुट्ठी बाँध घूमता हूँ
तुम पूछो ता उत्तर दू

तिरपन वर्ष
अनाडी बैल ने निभाया
अब शिकार करने आयी
नगे पैर शून्यता

—बकवास

## नसरुद्दीन

[ 1 ]

मुल्ला नसरुद्दीन मत बनो
कोई वैभव नहीं हमारे पास
गुटर गू बनकर बैठने को
कमी और कष्ट—
सदा अटपटा—
इसी तरह जीवन चलेगा
कभी सर मत झुकाना
फाइव स्टार व्यवस्था को
सदा नसरुद्दीन उत्तर सुनाना

[ 2 ]

बहुत आशा करता हूँ
और इसलिए निराश होता हूँ
हाँ—जैसे दो आँखों की महत्वाकांक्षा
और एक आँख फूटी होना

[ 3 ]

बिच्छू, जाडों में क्यों नहीं निकले
—ऐसा क्या मिला हमें बसन्त में।

## चाणक्य नीति

[ 1 ]

एक वृक्ष पर साथ बैठे
नाना वर्ण विहगम
प्रभात होते ही
दस दिशाओ मे उड जाते
क्या परिवेदना उन्हें

[ 2 ]

वैसी ही बुद्धि होती
व्यवसाय वैसा
सहायता उसी तरह की मिलती
जैसी भवितव्यता

[ 3 ]

नीचे क्या देखती हो बाला
क्या धरती म गिर गया
रे, रे मूख, न जानोग
तारुण्य का मोती खो गया

[ 4 ]

किस कुल म दाग नही
किस व्याधि ने नही सताया
कौन सुखी निरन्तर रहा
दु ख किसने नही पाया

## श्री लाभ

सदा लाभ जिस घर मे गूंजे
दिन भर खर्च
पर खर्च से दुगना लौटे
सब मुस्कराते मिलें और सुख बटायें
ऐसा घर बसाना चाहता था
सेठ रामपाद—कहता है जेलर
एक कदी की ओर दिखा

# भानु का दृष्टिकोण

## शकल-पोशाक

चेहरा गोल है मेरा
धत तेरे की
होता लम्बा सँकरा
शरलक होम्स जैसा

अबकी बार माँ, कृपया
अलग-अलग कपड़े की
हमारी कमीज़ बनवाना
पहले तो भानु का भाई होना
फिर कपड़ो से पहिचाने जाना

## दाल रोटी-सब्जी

दालो की दाल
अरहर की दाल
धीमी आँच म देर तक पकी

चँदिया फुलका चपाती
इस परिवार की प्रौढा रोटी
इसी खानदान के
अलग गिने जाते
रईस पराठा पूरी
पजाव म वश की शाखा
हुई तन्दूरी

आलू मेथी से बढिया
यदि कोई सब्जी बन जाय
तो वह रसोइए का कमाल है

## कडवा

१

क्यो लोग चाहते कडवा
ब्याहते दुखी ककशा

मधुर चाहनेवाला हृदय
पुण्य से मिलता

अपराधी जैसे
सज़ा की ओर बढता
मन्दिर की ओर
बलि का बकरा

शनिश्चरी पर
मँडरा रहे हैं
आजकल भाई साहब

## कृपा

न झाड़ू हुआ
　　　　न झाड़ू झाड़नेवाला
धूप में बैठा
　　　　कविताएँ लिखता
यह भगवान की कृपा

(रूपान्तर)

## कार्टून्स

के राम

बेकाम

जीवन-भर पालतू

अब दीखने लगे

फालतू

हं हं मामा

यह सब जानते है

इनकी नज़र से कुछ नही बचा

मोटी औरतें

जीन्स पहने

स्त्री स्वतन्त्रता का

एक नमूना

मिसेज चन्दाकर

जिन्दा दिल

विहस्की गटक

सिगरेट सुलगा

बैठी हैं—मौका ताकती

जोर से हँसने

## पत्थर

मां नहलाती थी
एक पत्थर को रोज़
फिर लगाती चन्दन का टीका
क्या वह शालिग्राम हो सका

शायद नहीं---मां की सेवा से
मैं ही नहीं बदला
रहा पत्थर जैसा



## रात्रि-प्रार्थना

हे, बाल सखा कृष्ण !
अब मैं जाता हूँ सोने
मेरे मन की गौएँ

रात्रि-भर विचरेंगी वन मे
इनकी देख रेख तुम्हारे जिम्मे